अध्याय

04

वे आँखें

© NCERT not to be republished

सुमित्रानंदन पंत

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

1.जीवन परिचय

I. **मूल नाम–** गोसाईं दत्त

II. **जन्म–** 20 मई सन् 1900 कौसानी, जिला अल्मोड़ा (उत्तरांचल)

III. **शिक्षा–** सुमित्रानंदन पंत की प्रारंभिक शिक्षा कौसानी के गाँव में तथा उच्च शिक्षा बनारस और इलाहाबाद में हुई ।

IV. 1921 के असहयोग आंदोलन में उन्होंने कॉलेज छोड़ दिया था, पर देश के स्वतंत्रता संग्राम की गंभीरता।

V. इन्हीं दिनों संयोगवश उन्हें कालाकांकर में ग्राम जीवन के अधिक निकट संपर्क में आने का अवसर मिला। उस ग्राम जीवन की पृष्ठभूमि में जो संवेदन उनके हृदय में अंकित होने लगे, उन्हें वाणी देने का प्रयत्न अपने काव्य मे किया है।

VI. **निधन–** 28 दिसम्बर सन् 1977

2. साहित्यिक परिचय

I. छायावाद के प्रमुख आधार स्तंभ सुमित्रानंदन पंत प्रकृति के चितेरे कवि हैं। हिंदी कविता में प्रकृति को पहली बार प्रमुख विषय बनाने का श्रेय सुमित्रानंदन पंत को हैं । इन्हें प्रकृति का सुकुमार कवि कहा जाता है।

II. इनकी कविता प्रकृति और मनुष्य के अंतरंग संबंधों का दस्तावेज़ है। प्रकृति के अद्भुत चित्रकार पन्त कविता में बदलाव के पक्षधर है।

III. शुरुआती दौर में छायावादी कविताएँ लिखे। आगे चल कर प्रगतिशील दौर में 'ताज' और 'वे आँखें' जैसी कविताएँ भी लिखी ।

IV. अरविंद के मानववाद से प्रभावित होकर 'मानव तुम सबसे सुंदरतम्' जैसी पंक्तियाँ भी लिखते रहें। उन्होंने नाटक,कहानी, आत्मकथा, समालोचना,के क्षेत्र में भी काम किया है ।

V. **भाषा शैली—** पंत जी की शैली अत्यंत सरस एवं मधुर है। बंग्ला तथा अंग्रेज़ी भाषा से प्रभावित होने के कारण इन्होंने गीतात्मक शैली अपनाई। सरलता, मधुरता, चित्रात्मकता, कोमलता और संगीतात्मकता इनकी शैली की प्रमुख विशेषताएँ हैं। पंत जी सौंदर्य के उपासक थे।

VI. प्रमुख रचनाएँ

वीणा

ग्रंथि

पल्लव

गुंजन

युगांत

युगवाणी

ग्राम्या

स्वर्णकिरण

कला और बूढ़ा चाँद

© JCERT not to be republished

VII. **सम्मान–** भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार, साहित्य अकादमी पुरस्कार, सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार, पद्मभूषण।

पाठ का सार

1. 'वे आँखें' पंत जी की प्रगतिशील दौर की कविता है। इसमें विकास के विरोधाभासी अवधारणाओं पर करारा प्रहार किया गया है।
2. युग-युग से शोषण के शिकार किसान का जीवन कवि को आहत करता है।
3. दुखद बात यह है कि स्वाधीन भारत में भी किसानों को केंद्र में रखकर व्यवस्था ने कोई निर्णायक हस्तक्षेप नहीं किया ।
4. कविता ऐसे ही दुष्चक्र में फँसे किसानों के व्यक्तिगत एवं पारिवारिक दुखों की परतें खोलती है
5. सामाजिक विषमता के शिकार किसानों की समस्याओं से स्वार्थी समाज को रूबरू कराती है ताकि किसानों की समस्याओं पर कोई निर्णायक हस्तक्षेप व्यवस्था द्वारा किया जा सके।

सप्रसंग व्याख्या

1.

अंधकार की गुहा सरीखी
उन आँखों से डरता है मन,
भरा दूर तक उनमें दारुण
दैन्य दुख का नीरव रोदन।
वह स्वाधीन किसान रहा,
अभिमान भरा आँखों में इसका,
छोड़ उसे मँझधार आज
संसार कगार सदृश बह खिसका।

1. शब्दार्थ –

गुहा– गुफा

सरीखी– समान

दारुण– घोर,निर्दय,कठोर

नीरव– शब्दरहित

मँझधार– बीच धारा

कगार– किनारे,तट

2. प्रसंग– प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह' -भाग 1 के 'वे आँखें' नामक पाठ से लिया गया है ।इसके रचयिता प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत हैं। काव्यांश में किसानों के दुख-दर्द का मार्मिक चित्रण के साथ-साथ समाज द्वारा उनकी उपेक्षा भाव को भी उभारा गया है।

3. व्याख्या– कवि कहते हैं कि मुझे अंधेरी गुफा की तरह गड्ढों में धँसी हुई किसान की आँखों से डर लगता है। किसानों का शोषण सदियों से समाज द्वारा किया गया है उनमें दीनता भरा नीरव रोदन छिपा है अर्थात् वे शब्द रहित रुदन के लिए विवश हैं क्योंकि समाज उनकी विवशता का फायदा उठा रहा है। वह खुल कर रो भी नहीं सकते अर्थात् उनकी समस्याएँ सुनने वाला कोई नहीं है।

© JCERT not to be republished

स्वाधीनता के बाद किसानों को समाज से कुछ उम्मीदें हो गई थी किअब उनकी स्थिति में सुधार होगी क्योंकि महापुरुषों द्वारा ये सपने दिखाए गए थे। किंतु समाज उनको मँझधार में छोड़ कर नदी के तट की तरह बहकर खिसक गया। अर्थात् स्वाधीनता के बाद भी उनको केंद्र में रखकर कोई निर्णायक हस्तक्षेप नहीं हुआ।

4. विशेष–

'अंधकार की गुहा सरीखी' एवं 'कगार सदृश' में उपमा और 'दारुण दैन्य दुख' में अनुप्रास अलंकार है।

भाषा में लाक्षणिकता है।

2.

लहराते वे खेत दृगों में

हुआ बेदखल वह अब जिनसे,

हँसती थी उसके जीवन की

हरियाली जिसके तृण- तृण से।

आँखों ही में घूमा करता

वह उसकी आँखों का तारा,

कारकुनों की लाठी से जो

गया जवानी ही में मारा।

1. शब्दार्थ–

दृग– आँख

तृण–तृण– तिनके–तिनके

आँखों का तारा– अत्यन्त प्रिय

कारकुनों– जमींदारों के कारिंदे

2. प्रसंग– प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह' –भाग 1 के 'वे आँखें'नामक पाठ से लिया गया है । इसके रचयिता प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत हैं। कवि ने काव्यांश में जमींदारों द्वारा किसानों पर किये जाने वाले अत्याचार एवं शोषणों की बानगी प्रस्तुत किया है ।

3.व्याख्या– किसान अपने खुशहाल जीवन को याद कर रहा है। उनकी आँखों के आगे खेत लहलहाते नजर आते हैं जबकि अब उसे उन खेतों से बेदखल कर दिया गया है अर्थात् जमींदारों ने उनकी ज़मीन हड़प ली है।कभी उन खेतों की हरियाली उनके जीवन को सुखमय बनाते थे। अब वे सब खत्म हो गये। जमींदारों द्वारा किसानों पर तरह-तरह के ज़ुल्म किये जाते हैं उनमें से एक उदाहरण देते हुए कवि कहते हैं कि किसान के जवान बेटे को जमींदार के कारिंदों ने पीट-पीट कर मार डाला अर्थात् जमींदारों के अत्याचार का भेंट उनका जवान बेटा चढ़ गया।

4. विशेष–

'तृण- तृण' में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है।

भाषा में लाक्षनिकता है ।

3.

बिका दिया घर-द्वार,

महाजन ने न ब्याज की कौड़ी छोड़ी,

रह-रह आँखों में चुभती वह

© JCERT not to be republished

कुर्क हुई बरधों की जोड़ी।

उजरी उसके शिवा किसे कब

पास दुहाने आने देती?

अह,आँखों में नाचा करती

उजड़ गयी जो सुख की खेती।

1. शब्दार्थ–

महाजन– साहूकार,ऋण देने वाला

कौड़ी– एक पैसा

कुर्क– नीलाम

बरधा– बैल

उजरी– उजली

शिवा– बिना

दुहाने– दूध दुहने के लिए

अह– आह

आँखों में नाचना– बार-बार सामने आना

2. प्रसंग– प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह' -भाग 1 के 'वे आँखें' नामक पाठ से लिया गया है । इसके रचयिता प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत हैं। कवि ने काव्यांश में जमींदारों द्वारा किसानों पर किये जाने वाले अत्याचार एवं शोषण की बानगी प्रस्तुत किया है ।

3. व्याख्या– जमींदारो द्वारा किसानों को ब्याज की ऊँची दरों पर ऋण दी जाती है ताकि उनका ज़मीन -ज़ायदाद नीलाम किया जा सके। किसानों पर होने वाले इस तरह के शोषण का चित्रण करते हुए कवि कहते हैं कि किसान के कर्ज़ के एवज़ में उनका घर जमींदारों द्वारा नीलाम कर दिया गया।हद तो तब हो गयी जब जमींदारों ने किसान के बैलों की जोड़ी और धेनु गाय तक को नीलाम कर दिया। किसान अपनी गाय को याद करते हैं। जिसका नाम उजली था और जो केवल उनको ही दुहने देती थी।अब किसान के पास गाय-बैलों की सुखद यादों के अलावा कुछ नहीं है।

4. विशेष–

महाजनों के अत्याचार का चित्रण सजीव बन पड़ा है

'घर-द्वार','की कौड़ी', 'ने न', 'किसे कब'में अनुप्रास एवं रह-रह में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है ।

आँखों में नाचना मुहावरे का सटीक प्रयोग है।

4.

बिना दवा दर्पन के घरनी

स्वरग चली,-आँखें आती भर,

देख-रेख के बिना दुधमुँही

बिटिया दो दिन बाद गयी मर।

घर में विधवा रही पतोहू,

लछमी थी,यद्यपि पति घातिन,

पकड़ मँगाया कोतवाल ने,

डूब कुएँ में मरी एक दिन।

© JCERT not to be republished

1. शब्दार्थ-

दवा-दर्पन- दवा आदि

घरनी- पत्नी

स्वरग- स्वर्ग

दुधमुँही- नन्हीं

पतोहू- पुत्रवधू

घातिन- मारने वाली

2. **प्रसंग-** प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह' -भाग 1 के 'वे आँखें' नामक पाठ से लिया गया है ।इसके रचयिता प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत हैं। कवि ने काव्यांश में जमींदारों द्वारा किसानों पर किये जाने वाले अत्याचार एवं शोषण की बानगी प्रस्तुत किया है साथ ही स्त्रियों के प्रति पुरुष वर्चस्ववादी समाज के घृणित सोच को उजागर किया है।

3. **व्याख्या-** अपनी दुखद अतीत को याद करते हुए किसान की आँखें भर आती हैं कि कैसे दवाई के अभाव में उनकी पत्नी चल बसी और पर्याप्त देख-रेख के अभाव में उनकी नन्हीं बेटी का भी निधन हो गया।किसान के घर में लक्ष्मी जैसी उनकी विधवा पुत्रवधू थी। जिसे समाज पति को मारने वाली मानता था।एक दिन कोतवाल ने बुलाकर उनकी इज्जत लूट ली । ये सदमा वह बर्दाश्त नहीं कर पायी और कुएँ में कूदकर आत्महत्या कर ली।

4. विशेष-

'दवा दर्पन', 'देख-रेख', 'दो दिन बाद' में अनुप्रास अलंकार है ।

पुरुष वर्चस्ववादी समाज का स्त्रियों के प्रति घृणित सोच का चित्रण सजीव बन पड़ा है ।

5.

खैर पैर की जूती, जोरू

न सही एक दूसरी आती,

पर जवान लड़के की सुध कर

साँप लोटते फटती छाती।

पिछले सुख की स्मृति आँखों में

क्षण भर एक चमक है लाती,

तुरत शून्य में गड़ वह चितवन

तीखी नोक सदृश बन जाती ।

1. शब्दार्थ-

खैर- अच्छा,सुरक्षित

सुध- याद

शून्य- आकाश

चितवन- दृष्टि

तीखी- तीव्र,तेज

नोक- किसी वस्तु की आगे का नुकीला भाग

साँप लोटना- अत्यधिक व्याकुल होना

छाती फटना- बहुत दुखी होना

© JCERT not to be republished

2. प्रसंग- प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह' - भाग 1 के 'वे आँखें'नामक पाठ से लिया गया है ।इसके रचयिता प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत हैं। कवि ने किसान के माध्यम से स्त्रियों के प्रति पुरुष वर्चस्ववादी समाज के घृणित सोच को उजागर किया है।

3. व्याख्या- किसान को अपनी पत्नी की मृत्यु का विशेष शोक नहीं है ।वह उसे पैर की जूती के समान मानता है।उन्हें लगता है कि पत्नी तो विवाह करके दोबारा लायी जा सकती है परन्तु बेटा नहीं ।इसलिए वह बेटा को लेकर ज्यादा शोकाकुल है उनकी याद करके किसान व्याकुल हो उठता है।

किसान जब अपनी खुशहाल अतीत को याद करता है तो उनकी आँखों में चमक आ जाती है अर्थात् वह खुश हो जाता है।परन्तु अगले ही क्षण अपना वर्तमान पर नज़र डालता है तो उनकी दृष्टि तीखी नोक की तरह आकाश में गड़ जाती है अर्थात् उनके जीवन में दुःख ही दुःख है ।सुख तो केवल अतीत की क्षणिक सुखद स्मृतियों में है।

4.विशेष-

किसान का स्त्रियों के प्रति संकीर्ण सोच का चित्रण है।

'पैर की जूती' 'छाती फटना' मुहावरे का सटीक प्रयोग है।

© JCERT not to be republished

अभ्यास कविता के साथ

प्रश्न 1. अंधकार की गुहा सरीखी

उन आँखों से डरता है मन

(क) आमतौर पर हमें डर किन बातों से लगता है ?

उत्तर— जीवन में एकाएक आई विषम परिस्थितियों से इंसान कभी — कभी डरने लगता है।

जीवन में अचानक होने वाली दुर्घटनाओं से डर लगता है जिसमें जान — माल का नुकसान होता है।

प्राकृतिक आपदाओं जैसे बाढ़, भूकंप आदि से भी मनुष्य को डर लगता है।

मान-सम्मान और स्वाभिमान को चोट पहुँचाने वाली बातों से भी डर लगता है।

अपनों को खोने का डर हमेशा इंसान के मन में बना रहता है।

(ख) उन आँखों से किसकी ओर संकेत किया गया है ?

उत्तर— उन आँखों से किसान की कमजोर व दयनीय स्थिति की ओर संकेत किया गया है।

(ग) कवि को उन आँखों से डर क्यों लगता है?

उत्तर— कवि को किसान की उन आँखों से डर इसलिए लगता है क्योंकि उनमें गहन निराशा, हताशा, शोषण व उत्पीड़न की पीड़ा साफ — साफ दिखाई देती है।

(घ) डरते हुए भी कवि ने उस किसान की पीड़ा का वर्णन क्यों किया है ?

उत्तर— डरते हुए भी कवि ने उस किसान की आँखों की पीड़ा का वर्णन इसलिए किया है क्योंकि कवि अन्नदाता यानी किसान की दयनीय सामाजिक व आर्थिक स्थिति और उनकी समस्याओं के बारे में लोगों को बताना चाहते हैं।ताकि उनकी समस्याओं का निवारण हो सके।

(ड़) यदि कवि उन से नहीं डरता, क्या तब भी वह कविता लिखता ?

उत्तर— अगर कवि किसान की उन आँखों से नहीं डरता, तब भी वह कविता अवश्य लिखता क्योंकि किसी भी विषय को देखकर कवि के मन में जो भाव उत्पन्न होते हैं। कवि उन्हें एक कविता के रूप में कागज़ में उतार देता है।

प्रश्न 2. कविता में किसान की पीड़ा के लिए किन्हें जिम्मेदार बताया गया है ?

उत्तर— कविता में किसान की पीड़ा के लिए मुख्य रूप से सरकार, प्रशासन, महाजन, जमींदार,कोतवाल आदि को जिम्मेदार बताया गया हैं जिन्होंने किसी न किसी रूप में किसान का शोषण किया है।

आजादी के बाद भी किसान की उन्नति व उसकी समस्याओं का निवारण करने के लिए सरकार ने कोई ठोस योजना नहीं बनाई तो महाजन ने अपना कर्ज वसूलने के लिए उसका घर, बैलों की जोड़ी बिकवा दी। जबकि जमींदार ने उससे उसके खेत छीन लिए। विरोध करने पर उसके बेटे की निर्मम हत्या कर दी।आर्थिक तंगी के चलते वह अपनी बीमार पत्नी व बेटी का इलाज भी नहीं करा सका और कोतवाल ने बेवजह उसकी विधवा बहू को थाने में बुला लिया। जिस कारण शर्मिंदगी के चलते उसने भी आत्महत्या कर ली। ये सभी कारण किसान की पीड़ा के लिए जिम्मेदार रहे।

प्रश्न 3. पिछले सुख की स्मृति आँखों में क्षण भर एक चमक है लाती-

इसमें किसान के किन पिछले सुखों की ओर संकेत किया गया है ?

उत्तर— किसान अपने परिवार में अपने बेटे, बहु, पत्नी व दूधमुंही पुत्री के साथ सुखपूर्वक रहता था और खेती-बाड़ी का काम कर अपना जीवन प्रसन्नता पूर्वक बिता रहा था। वह अपने फसलों से लहराते हरे-भरे खेतों, दूध देने वाली उजरी गाय व बैलों की जोड़ी को देखकर खुश होता था।

लेकिन जीवन में आई एक के बाद एक विषम परिस्थितियों में उसका सबकुछ उजड़ गया। मगर उन सुख भरे दिनों की याद कर आज भी उसकी आँखों में चमक आ जाती हैं।

प्रश्न 4.सन्दर्भ सहित आशय स्पष्ट करें-

(क) उजरी उसके शिवा किसे कब

पास दुहाने आने देती?

तुरत शून्य में गड़ वह चितवन

तीखी नोक सदृश बन जाती ।

सन्दर्भ- प्रस्तुत पंक्तियाँ पन्त जी द्वारा रचित' वे आँखें 'कविता से ली गयी हैं। कवि

not to be republished © JCERT

ने किसानों की दयनीय दशा का चित्रण किया है।किसान के पास उजरी नमक गाय थी जिसे महाजन ने कर्ज़ वसूलने के लिए बिकवा दिया।

आशय– किसान के पास उजरी नामक गाय थी जिससे किसान को बहुत लगाव था।गाय भी उससे स्नेह रखती थी।अतः गाय उसके शिवा अन्य को दुहने नहीं आने देती थी। महाजन द्वारा ऋण वसूली के लिए गाय के बेचे जानी पर आज भी किसान की आँखों के सामने गाय के प्रति स्नेह उम्र पड़ता है।

(ख) घर में विधवा रही पतोहू

लछमी थी,यद्यपि पति घातिन

सन्दर्भ– प्रस्तुत पंक्तियाँ पन्त जी द्वारा रचित 'वे आँखें ' कविता से ली गयी हैं।कवि ने किसानों की दयनीय दशा का चित्रण किया है।साहूकार के कारिंदों ने किसान के बेटे को मार डाला था।किसान की पुत्रवधू भी जमींदारों के अत्याचार की भेंट चढ़ गयी।

आशय– किसान के बेटे की हत्या के बाद उनकी पुत्रवधू अकेली रह गयी थी।किसान उसे लक्ष्मी मानता था।लेकिन समाज उनको पति की हत्यारिन समझने लगा ।

(ग) पिछले सुख की स्मृति आँखों में

क्षण भर एक चमक है लाती

तुरत शून्य में गड़ वह चितवन

तीखी नोक सदृश बन जाती ।

सन्दर्भ– प्रस्तुत पंक्तियाँ पन्त जी द्वारा रचित 'वे आँखें' कविता से ली गयी हैं। कवि ने किसानों की दयनीय दशा का चित्रण किया है।किसान अतीत की स्स्मृतियों से कभी खुश हो जाता है तो कभी दुःख में डूब जाता है।

आशय– किसान अपने अतीत के सुख और आनंद को याद करके ख़ुश हो जाता है लेकिन यह ख़ुशी ज्यादा देर तक नहीं रहती जैसे ही उसे वास्तविकता का पता चलता है तो उनकी नज़रें आकाश पर गड़ जाती है अर्थात् उसे चारो तरफ़ निराशा ही नज़र आती है ।

प्रश्न 5. "घर में विधवा रही पतोहू....../खैर पैर की जूती,जोरू/एक न सही दूजी आती "इन पंक्तियों को ध्यान में रखते हुए 'वर्तमान समाज और स्त्री'विषय पर एक लेख लिखें।

उत्तर– भारतीय समाज पुरुष प्रधान समाज है।यहाँ पुरुष वर्चस्ववाद के कारण स्त्रियों की आर्थिक,सामाजिक व राजनैतिक स्थिति पुरुषों की तुलना में ठीक नहीं हैं ।ग्रामीण क्षेत्रों में स्त्रियों की स्थिति और भी अधिक दयनीय हैं।विधवा होने के बाद औरतों को अभिशाप माना जाता है और पति की हत्या का अपराध भी उनके मत्थे मढ़ दिया जाता है।पत्नी को अपनी पैर की जूती समझने वाले ये भूल जाते हैं कि उनकी माँ भी किसी की पत्नी ही है। बेटी भी किसी की पत्नी होगी।अभी भी विधवाओं का विवाह परंपरा के प्रतिकूल माना जाता है।वर्तमान में यद्यपि स्त्रियों की दशा में सुधार हुई है तथापि अभी भी समाज को स्त्रियों के प्रति नज़रिया बदलने की आवश्यकता है।

© JCERT
not to be republished

बहुवैकल्पिक प्रश्न

1. कौन-सी भावना किसान की निराश आँखों में क्षण भर के लिए चमक लाती थी?

(क) विगत सुख की स्मृति

(ख) बचपन के दिनों की स्मृति

(ग) जवानी की मस्ती

(घ) अतीत की स्मृति

उत्तर- **(क) विगत सुख की स्मृति**

2. 'वे आँखें' कविता के कवि का क्या नाम है?

(क) जयशंकर प्रसाद

(ख) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

(ग) रामनरेश त्रिपाठी'

(घ) सुमित्रानंदन पंत

उत्तर- **(घ) सुमित्रानंदन पंत**

3. 'वे आँखें' शीर्षक कविता में किसकी आँखों का वर्णन किया गया है?

(क) कवि की

(ख) कवि की प्रिया की

(ग) बच्चे की

(घ) किसान की

उत्तर- **(घ) किसान की**

4. किसकी आँखों से कवि का मन डर गया था?

(क) शेर की

(ख) किसान की

(ग) बिल्ली की

(घ) भूत की

उत्तर- **(ख) किसान की**

5. किसान की आँखों में क्या भरा हुआ था?

(क) दैन्य दुख का नीरव रोदन

(ख) प्रसन्नता से उत्पन्न चमक

(ग) उत्साह

(घ) क्रोध

उत्तर- **(क) दैन्य दुख का नीरव रोदन**

6. कवि ने किसान की आँखों की तुलना किससे की है?

(क) अंधेरी गुफा

(ख) झील-सी आँखों

(ग) भोली-भाली आँखों

(घ) नीली आँखों

उत्तर- **(क) अंधेरी गुफा**

© JCERT not to be republished

7. 'वे आँखें' कविता में किसने किसका साथ छोड़ दिया?

(क) महाजन ने ज़मींदार का

(ख) कारिंदे ने जमींदार का

(ग) संसार ने किसान का

(घ) किसान ने महाजन का

उत्तर- **(ग) संसार ने किसान का**

8. किसान किन खेतों से बेदखल हुआ था?

(क) जो लहलहा रहे थे

(ख) जो सूखे पड़े थे

(ग) जिनमें बाड़ का पानी भरा था

(घ) जो बंजर थे

उत्तर- **(क) जो लहलहा रहे थे**

9. 'जीवन की हरियाली' से क्या तात्पर्य है?

(क) जीवन की प्रसन्नता

(ख) जीवन का संघर्ष

(ग) जीवन का दुःख

(घ) जीवन की गरीबी

उत्तर- **(क) जीवन की प्रसन्नता**

10. किसान का बेटा किसकी लाठी से मारा गया था?

(क) पुलिस

(ख) डाकुओं

(ग) कारकुनों

(घ) सेना

उत्तर- **(ग) कारकुनों**

11. किसान का बेटा किस अवस्था में मारा गया था?

(क) बचपन में

(ख) गरीबी में

(ग) जवानी में

(घ) बुढ़ापे में

उत्तर- **(ग) जवानी में**

12. किसान का घर द्वार किसने बिकवा दिया था?

(क) पुलिस ने

(ख) महाजन ने

(ग) पंचायत ने

(घ) जमींदार ने

उत्तर- **(ख) महाजन ने**

13. किसान की आँखों में रह-रहकर क्या चुभती थी?

(क) नीलाम हुई बैलों की जोड़ी

(ख) तेज रोशनी

(ग) पत्नी की मृत्यु

(घ) महाजन का धन

उत्तर- **(क) नीलाम हुई बैलों की जोड़ी**

© JCERT not to be republished

14. उजरी कौन थी?

(क) किसान की बकरी

(ख) किसान की गाय

(ग) किसान की भैंस

(घ) किसान की बेटी

उत्तर- (ख) किसान की गाय

15. किसान की आँखों में क्या नाचा करती थी?

(क) सुखी जीवन रूपी खेती

(ख) चिंता

(ग) निराशा

(घ) गरीबी

उत्तर- (क) सुखी जीवन रूपी खेती

16. किसान की पत्नी की मृत्यु का क्या कारण था?

(क) लापरवाही

(ख) दवा-दारू का अभाव

(ग) किसान की बेवफाई

(घ) डॉक्टर की गलती

उत्तर- (ख) दवा-दारू का अभाव

17. किसान की दुधमुँही बच्ची क्यों मर गई थी?

(क) देखरेख के बिना

(ख) भूख के कारण

(ग) गरीबी के कारण

(घ) छत गिरने के कारण

उत्तर-(क) देखरेख के बिना

18. किसने किसे 'पति-घातिन' कहा?

(क) समाज ने विधवा को

(ख) कन्या को माता-पिता ने

(ग) वेश्या को पुलिस ने

(घ) सौत ने सौत को

उत्तर- (क) समाज ने विधवा को

19. कौन कुएँ में डूबकर मर गई थी?

(क) किसान की पत्नी

(ख) किसान की बेटी

(ग) किसान की विधवा पुत्रवधू

(घ) किसान की माता

उत्तर- (ग) किसान की विधवा पुत्रवधू

20. पत्नी को पैर की जूती किसने कहा है?

(क) महाजन ने

(ख) ज़मींदार ने

(ग) कोतवाल ने

(घ) किसान ने

उत्तर- (घ) किसान ने

© JCERT not to be republished

21. किसे याद करके किसान की छाती पर साँप लोटते थे?

(क) खेतों को

(ख) मरे हुए जवान बेटे को

(ग) मृतक पत्नी को

(घ) बिके बैलों को

उत्तर- (ख) मरे हुए जवान बेटे को

22. सुमित्रानंदन पंतजी का जन्म कब हुआ ?

(क) 20 मई 1900 (कौसानी ग्राम, अल्मोड़ा, बिहार)

(ख) 20 मई 1900 (कौसानी ग्राम, अल्मोड़ा, उत्तराखंड)

(ग) 20 जून 1900 (कौसानी ग्राम, अल्मोड़ा, मध्यप्रदेश)

(घ) 20 दिसंबर 1900 (कौसानी ग्राम, अल्मोड़ा, छत्तीसगढ़)

उत्तर- (ख) 20 मई 1900 (कौसानी ग्राम, अल्मोड़ा, उत्तराखंड)

23.सुमित्रानंदन पंत का मूल नाम क्या था ?

(क) रामनाथ सहाय

(ख) कृष्णकांत मिश्र

(ग) भगवान दत्त

(घ) गुसाईं दत्त

उत्तर- D.गुसाईं दत्त

24. सुमित्रानंदन पंतजी की मृत्यु कब हुई?

(क) 28 मई 1977

(ख) 28 जनवरी 1977

(ग) 28 अगस्त 1999

(घ) 28 दिसम्बर 1988

उत्तर- (ख) 28 दिसम्बर 1977

25. "प्रकृति के सुकुमार कवि" किसे कहा जाता है?

(क) रामनरेश त्रिपाठी

(ख) प्रेमचंद

(ग) सुमित्रानंदन पंतजी

(घ) जयशंकर प्रसाद

उत्तर- C.सुमित्रानंदन पंतजी

26. सुमित्रानंदन पंतजी कौन से वाद के कवि माने जाते हैं?

(क) नई कविता

(ख) छायावाद

(ग) हालावाद

(घ) प्रयोगवाद

उत्तर- B.छायावाद

© JCERT not to be republished